

दृष्ट्वा स्त्रीचरितं समस्तजगतां निन्द्यं सदा वञ्चकं ज्ञात्वा संसृतिदेहभोगमखिलं शक्रस्य चापोपमम्।
नाम्ना देवरतिप्रभुर्जिनपतेर्दीक्षां समादाय यः संजातो मुनिसत्तमो गुणनिधिर्नित्यं स मेऽशं क्रियात् ॥४१॥
इति कथाकोशे देवरतिराज्ञः कथा समाप्ता।

३१. गोपवती-कथा

सर्वसौख्यप्रदं नत्वा श्रीजिनं जगदर्चितम्। वैराग्याय सतां वक्ष्ये वृत्तं गोपवतीश्रितम् ॥१॥
पलासग्रामवास्तव्यो नाम्ना सिंहबलो नरः। भार्या गोपवती तस्य संजाता दुष्टमानसा ॥२॥
एकदा पद्मिनीखेटग्रामं गत्वा निजेच्छया। प्रच्छन्नं स्वस्त्रियो गाढं सुधीः सिंहबलो मुदा ॥३॥
तत्रस्थसिंहसेनाख्य ग्रामकूटस्य पुत्रिकाम्। सुभद्रां रूपलावण्यमण्डितां परिणीतवान् ॥४॥
तच्छ्रुत्वा पापिनी सापि महाकोपाग्निकम्पिता। गत्वा गोपवती तत्र तद्गृहं सम्प्रविश्य च ॥५॥
मातृकाग्रे प्रसुप्तायाः सुभद्रायाश्च मस्तकम्। गृहीत्वा गृहमायाता सपत्नी पापकारिणी ॥६॥
प्रातःकाले सुभद्राया रुण्डं दृष्ट्वा भयानकम्। सोपि सिंहबलो दुःखी समायातो निजं गृहम् ॥७॥

रक्तारानी सरीखी कुलटा स्त्रियों का घृणित चरित देखकर और संसार, शरीर, भोगादिकों को इन्द्र-धनुष की तरह क्षणिक समझकर जिन देवरति राजा ने जिनदीक्षा ग्रहण कर मुनिपद स्वीकार किया, वे गुणों के खजाने मुनिराज मुझे मोक्ष लक्ष्मी का स्वामी बनावें ॥४१॥

३१. गोपवती की कथा

संसार द्वारा वन्दना-स्तुति किए गए और सब सुखों को देने वाले जिनभगवान् को नमस्कार कर गोपवती की कथा लिखी जाती है, जिसे सुनकर हृदय में वैराग्य भावना जगती है ॥१॥

पलासगाँव में सिंहबल नाम का एक साधारण गृहस्थ रहता था। उसकी स्त्री का नाम गोपवती था। गोपवती बड़े दुष्ट स्वभाव की स्त्री थी। उसकी दिन-रात की खटपट से बेचारा सिंहबल तबाह हो गया। उसे पलभर के लिए भी गोपवती के द्वारा कभी सुख नहीं मिला ॥२॥

गोपवती से तंग आकर एक दिन सिंहबल पास ही के एक पद्मिनीखेट नाम के गाँव में गया। वहाँ उसने अपनी पहली स्त्री को बिना कुछ पूछे-ताछे गुप्त रीति से सिंहसेन चौधरी की सुभद्रा नाम की लड़की से, जो कि बहुत ही खूबसूरत थी, ब्याह कर लिया। किसी तरह यह बात गोपवती को मालूम हो गई, सुनते ही क्रोध के मारे वह आग-बबूला हो गई उससे सिंहबल का यह अपराध नहीं सहा गया। वह उसे उसके अपराध की योग्य सजा देने की फिराक में लग गई ॥३-५॥

एक दिन शाम के कोई सात बजे होंगे कि गोपवती अपने घर से निकलकर पद्मिनीखेट गई। उस समय कोई ग्यारह बज गए होंगे। गोपवती सीधी सिंहसेन के घर पहुँची। घर के लोगों ने समझा कि कोई आवश्यक काम के लिए यहाँ आई होगी, सबेरा होने पर विशेष पूछ-ताछ करेंगे। यह विचार कर वे सब सो गए। गोपवती भी तब लोगों को दिखाने के लिए सो गई पर जब सबको नींद आ गई, तब आप चुपके से उठी और जहाँ अपनी माँ के पास बेचारी सुभद्रा सोई थी, वहाँ पहुँचकर उस

तदा गोपवती तस्य स्वनाथस्यातिसंभ्रमम्। आगतस्वागतं कृत्वा सा ददाति स्म भोजनम् ॥८॥
 तदुद्वेगात्तदा तस्मै रोचते नैव भोजनम्। महादुःखाश्रितस्यात्र का प्रीतिर्भोजनादिषु ॥९॥
 ततस्तया सुपापिन्या गोपवत्या प्रकोपतः। सुभद्राया मुखं पश्य यतस्ते रोचतेशनम् ॥१०॥
 इत्युक्त्वा मस्तकं तच्च क्षिप्तं तद्भाजने तदा। तद्दृष्ट्वा भयभीतोसौ राक्षसीयं भयानका ॥११॥
 इति ज्ञात्वा द्रुतं चित्ते नश्यन्सिंहबलो भटः। कुन्तेन मारितः कष्टं पापिन्या दुष्टयोषिता ॥१२॥
 मत्वा स्त्रीचरितं चेति स्वचित्ते चतुरोत्तमैः। विश्वासो नैव कर्तव्यो दुष्टस्त्रीणां कदाचन ॥१३॥
 स जयति जिनदेवो देवदेवेन्द्रवन्द्यो मदनमदकरीन्द्रध्वंसने यो मृगेन्द्रः।
 तव भवभयहर्ता स्वर्गमोक्षप्रकर्ता शिवयुवतिसुभर्ता शान्तये शान्तिदाता ॥१४॥

इति कथाकोशे गोपवती-कथा समाप्ता।

३२. वीरवती-कथा

नत्वाहंतं जगन्मित्रं पवित्रं मुक्तिशर्मदम्। वक्ष्ये वीरवतीवृत्तं सतां वैराग्यकारणम् ॥१॥

पापिनी ने सुभद्रा का मस्तक काट लिया और उसे लेकर रात ही में अपने घर पर आ गई। सबेरा होते ही यह हाल सिंहबल को मालूम हुआ। सुभद्रा के मुर्दे को देखकर उसे बेहद दुःख हुआ। वह खिन्न मन होकर अपने घर आ गया। उसे आया देखकर गोपवती अब उसका बड़ा आदर-सत्कार करने लगी। बड़ा स्नेह प्रकट कर उसे भोजन कराने लगी। पर सिंहबल के हृदय पर तो सुभद्रा के मरण की बड़ी गहरी चोट लगी थी, इसलिए उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था और वह सदा उदास रहा करता था और सच भी है, एक महा दुःखी को भोजन वगैरह में क्या प्रीति होती होगी? सिंहबल की सुभद्रा के लिए वह दशा देख गोपवती का क्रोध और भी बढ़ गया। एक दिन बेचारा सिंहबल उदास मन से भोजन कर रहा था। यह देख गोपवती ने क्रोध से सुभद्रा का मस्तक लाकर उसकी थाली में डाल दिया और बोली-हाँ, बिना इसके देखे तुझे भोजन अच्छा नहीं लगता था; अब तो अच्छा लगेगा न? सुभद्रा के सिर को देखकर सिंहबल काँप गया। वह “हाय! यह तो महाराक्षसी है” इस प्रकार जोर से चिल्लाकर डर के मारे भागने लगा। इतने में राक्षसी गोपवती ने पास ही पड़े हुए भाले को उठाकर सिंहबल की पीठ में जोर से मारा कि वह उसी समय तड़फड़ा कर वहीं पर ढेर हो गया। गोपवती के ऐसे घृणित चरित को देखकर बुद्धिमानों को उचित है कि वे दुष्ट स्त्रियों पर कभी विश्वास न लावें ॥६-१३॥

वे कर्मों के जीतने वाले जिनेन्द्र भगवान् संसार में सर्वश्रेष्ठ कहलावें जो कामरूपी हाथी के मारने को सिंह हैं, संसार का भय मिटाने वाले हैं, शान्ति, स्वर्ग और मोक्ष के देने वाले हैं और मोक्षरूपी रमणी-रत्न के स्वामी हैं। वे मुझे भी शान्ति प्रदान करें ॥१४॥

३२. वीरवती की कथा

संसार के बन्धु, पवित्रता की मूर्ति और मुक्ति का स्वतंत्रता का सुख देने वाले जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर वीरवती का उपाख्यान लिखा जाता है, जो सत्पुरुषों के लिए वैराग्य को बढ़ाने वाला है ॥१॥